श्वेतकुष्ठ और सूर्योपासना

(लेखक—श्रीकान्तजी शास्त्री वैद्य)

श्रीपीताम्बरापीठ दतियाके संस्थापक परमपूज्य श्रीस्वामीजी महाराजका अनुभव है कि सूर्याष्टकका श्रद्धापूर्वक नित्य पाठ करनेसे श्वेतकुष्ठके रोगी लाभान्वित होते हैं। शृङ्गवेरपुरनिवासी एक महात्माका अनुभव है कि रविवारका व्रत रखने और सूर्यनारायणको नित्य अर्घ्य देनेसे श्वेतकुष्ठ जाता रहता है। अर्घ्यके बाद कंडेकी आगपर शुद्ध घृत और गुग्गुलुका धूप देना चाहिये। जले हुए गुग्गुलुको उठाकर सफेद दागोंपर मलना चाहिये।

जिन लोगोंको लगातार विरुद्ध आहार करते रहना पड़ता है या जो पेचिसके रोगी हैं अथवा अम्लपित्तसे ग्रस्त हैं, उनमें इसकी सम्भावना अधिक होती है, यह देखनेमें आता है। विरुद्ध आहारकी सूची लम्बी है, पर मोटे तौरसे यह समझ लेना चाहिये कि दूधके साथ खटाई और केले इत्यादिका सेवन विरुद्ध आहारोंमें आता है। अतः कारणोंपर ध्यान देकर थोड़ा-बहुत औषधोपचार चलाते रहनेसे लाभकी शीघ्र सम्भावना है। लौहघटित योगको बाकुचीके हिमसे सेवन करानेसे भी लाभ देखा गया है।

इसके रोगीको खटाई, मिर्च, मांस, अंडा, मदिरा, डालडा, अरवी, उड़द, तली-भुनी वस्तुएँ, भारी चीजें नहीं खानी चाहिये। स्टेनलेस स्टील और अल्म्यूनियमके बर्तनोंका प्रयोग भी विशेषतः भोजन-पाक करनेमें अवश्य बंद कर देना चाहिये। (सूर्याष्टक आगे प्रकाश्य है।)